(जिला स्तरीय मौसम पूर्वानुमान भारत मौसम विभाग, नई दिल्ली के आधार पर तैयार की गई)

चौ स कु हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय] -176 062, हिमाचल प्रदेश

सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

जिला: कांगड़ा **दिनांक: 25th June, 2024**

www.hillagric.ac.in/info/kisano_ke_liye_soochna, email: ranars66@rediffmail.com Ph.No. : +91-1894 232245 Fax: 91-1894 230406

पिछले पांच दिनों का मौसम सारांश

वर्षा (मि.मी.)	-
अधिकतम तापमान {°सेल्सियस}	32-36
न्यूनतम तापमान {° सेल्सियस}	22-24
सापेक्षिक आर्द्रता (%)	62-78

आगामी पांच दिनों का मौसम पूर्वानुमान:

मौसमी तत्व /दिनांक	वर्षा (मि.मी.)	अधिकतम तापमान {°सेल्सियस}	न्यूनतम तापमान {° सेल्सियस}	सापेक्षिक आर्द्रता (%) अधिकतम	सापेक्षिक आर्द्रता (%) न्यूनतम	हवा की गति (कि.मी/घंटा)	हवा की दिशा (डिग्री	बादलों की स्थिति (ओक्टा)
26-06-2024	1	37	24	73	63	12	68	4
27-06-2024	1	37	24	72	62	10	68	4
28-06-2024	1	38	24	72	61	13	68	4
29-06-2024	12	38	23	81	74	10	198	7
30-06-2024	15	38	22	84	76	10	202	7

आने वाले 5 दिनों के लिए मौसम का पूर्वानुमान:

अधिकतम तापमान 37-38 ^{0}C और न्यूनतम तापमान 22-24 ^{0}C के बीच रहने के संभावना है। सापेक्षित आद्रता लगभग 61-84 % के बीच रहेंगी। हवाओं की गति 10-13 किलोमीटर प्रति घंटे के हिसाब से चलेंगी।

किसान भाई अधिक जानकारी व अनुमोदित कृषि कार्यों के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय (http://www.hillagric.ac.in/extension/dee/farm_advice)द्वारा प्रकाशित पखवाड़ा को अवश्य देखें. साथ में उस क्षेत्र के कृषि अधिकारी व कृषि विज्ञानं केंद्र के साइंटिस्ट से संपर्क करें

मुख्य फसलें	अवस्था	कृषिय सलाह
किसानों को मक्का की फसलों की बुवाई जल्द से जल्द करने की सलाह दी जाती है		
मक्का	बीजाई	मक्के की बीजाई मिट्टी में नमी सुनिश्चित करने या बारिश के बाद करने की सलाह दी जाती है। बीज दर 20 किग्रा/हेक्टेयर रखने की सलाह दी जाती है। मक्का की फसल में सभी प्रकार के खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के

		लिए बुवाई के 20 दिन बाद टेम्बोट्रियन 120 ग्राम प्रति हेक्टेयर सर्फेक्टेंट के साथ छिड़काव करें या मक्का की फसल में खरपतवारों की 2-3 पत्ती अवस्था पर टॉप्रामजोन 25.2 ग्राम प्रति हेक्टेयर + एट्राजीन 750 ग्राम प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। यदि दलहनी फसलों को मक्का के साथ मिलाकर उगाया जाता है, तो उपरोक्त रसायनों का प्रयोग न करें। इसके लिए 4.5 लीटर स्टाम्प प्रति हेक्टेयर को 750 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 48 घंटे के भीतर छिड़काव करें।
धान	बीजाई / रोपाई	धान के खेत को पोखर बनाने के बाद रोपाई के लिए तैयार किया जाना चाहिए तथा वर्षा के बाद रोपाई की सलाह दी गई। किसानों को सलाह दी गई कि वे उचित मिट्टी की नमी सुनिश्चित करते हुए 60 किलोग्राम प्रति घंटा बीज दर का उपयोग करके सीधे बीज वाली फसल की बुवाई करें। बीज को 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) से उपचारित किया जाना चाहिए। ब्लास्ट रोग के लिए धान की नर्सरी की निगरानी करें। धान की नर्सरी में ब्लास्ट और भूरा धब्बा रोग के लक्षण दिखाई देने पर, साफ आसमान वाले दिन कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) को 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सीधी बीज वाली धान की फसल की बुवाई के बाद, किसानों को बुवाई के 72 घंटे के भीतर 1.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर (3.0 लीटर प्रति हेक्टेयर) की दर से शाकनाशी ब्यूटाक्लोर का छिड़काव करना चाहिए। रोपाई की गई फसल के मामले में किसान ब्यूटाक्लोर कणिकाओं को 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़क सकते हैं। रोपाई वाले धान में प्रभावी खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 4 दिन बाद सेफनर के साथ प्रेटिलाक्लोर 800 ग्राम प्रति हेक्टेयर या रोपाई के 7 दिन बाद सेफनर के बिना प्रेटिलाक्लोर का प्रयोग करें।
आनाज भंडारण		अनाज को भंडारण घर की अच्छी तरह सफाई करें तथा अनाज को अच्छी तरह से सुखा लें । भंडारघर की छत, दीवारों और फर्श पर एक भाग मेलाथियान 50 ई.सी.को 100 भाग पानी में मिला कर छिड़काव करें। यदि पुरानी बोरियां प्रयोग करनी पड़े तो उन्हें एक भाग मेलाथियान व 100 भाग पानी के घोल में 10 मिनट तक भिगो कर छाया में सुखा लें। दानों का भंडारण सुबह ही बोरों में डालें गर्म दानों को रखने से रोग तथा कीडों के पनपने की संभावना बढ़ सकती है।
चारा फसलें	बीजाई	हरा चारा प्राप्त करने के लिए सिंचित क्षेत्रों में लोबिया के साथ चारा मक्का की बीजाई की जा सकती है।
सब्जी की फसलें	सब्जियों की फसलें सिंचाई सुविधाओं के साथ छोटे-छोटे इलाकों में उगाई जाती हैं। हिमाचल प्रदेश के कुछ स्थानों पर बारिश की संभावना है। यदि बारिश नहीं हुई तो आवश्यकतानुसार सुबह और शाम को हल्की सिंचाई करें, अन्यथा परागण की समस्या हो सकती है। और फसल की उपज में कमी आएगी। परिपक्व सब्जियों की कटाई सुबह एवं शाम के समय करने तथा फसल की कटाई के बाद छाया में रखने की सलाह दी। केवल सिंचित क्षेत्रों में ही बीजाई एवं रोपाई करें	
टमाटर, बैंगन		बैंगन तथा टमाटर की फसल को प्ररोह एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्ररोहों को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड़ कीटनाशी 48 ई.सी. @ 1 मि.ली./4 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें.
खीरा, समर स्क्वैश, करेला, लौकी	प्रत्यारोपण	कद्दू वर्गीय पौधों का प्रत्यारोपण किया जा सकता है। अतिरिक्त पानी की निकासी की सलाह दी जाती है। लाल कद्दू भृंग के नियंत्रण के लिए

		मेलाथियान 50 ई.सी. @ 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
अदरक, कचालू/ अरबी, हल्दी	बीजाई	प्रदेश के निचले एवं मध् यम पर्वतीय क्षेत्रों में अदरक, कचालू/ अरबी, हल्दी की बीजाई के लिए उपयुक्त समय है। बीजाई के लिए स्वस्थ प्रकंदों का प्रयोग करें। बीजाई से पहले आधे घंटे के लिए कवकनाशी बाविस्टिन 10 ग्राम /
गोभी, फूलगोभी, गाजर, मूली		ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र में सब्जियों जैसे बन्दगोभी, फूलगोभी, गाजर, मूली की फसलों में मिट्टी चढ़ाना और खाद का प्रयोग किया जा सकता है।
मशरूम	डिंगरीमशरूमपैदाबार	बंद कमरे में खुम्ब उत्पादन के लिए जलवायु उचित हैसफेद खुम्ब की फसल में कमरे का तापमान 17-18 सेल्सियस तक बनाए रखें और पानी भी छिड़कें। पानी छिड़कने के बाद हवा चलाए रखें।
फलउत्पादन	पोधसंरक्षण	आम के बगीचो में यदि गुच्छा रोग दिखाई दे तो पुष्प गुच्छ को काट कर नष्ट कर देवे एवं फुदका कीट की निगरानी करें .मिलीबग के बच्चे जमीन से निकलकर आम के तनों पर चड़ने को रोकने हेतु किसान भाई जमीन से 0.5 मीटर की ऊंचाई पर आम के तने के चारों तरफ 25 से 30 से.मी. चौड़ी अल्काथीन की पट्टी लपेटे। तने के आस-पास की मिट्टी की खुदाई करें जिससे उनके अंडे नष्ट हो जायेंगे। आम व अमरूद के बाग में जिकं, कॉपर, मैंगनीज, लौहा व बोरॉन के सूक्ष्म पोषक तत्वों का स्प्रे करें। नींबू प्रजाति के पोधों पर पर्ण सुरंगी कीट की निगरानी करें। लीची वृक्षों पर रैड रस्ट नियंत्रण हेतु अनुमोदीत रसायन का छिडकाव करें|
चाय	छंटाई	पत्ती की तुडबाई ठीक स्तर पर 7-8 दिन के अन्तराल पर करें ताकि अच्छी प्रतिशाता मिले जहाँ कहीं छाया हो पोधों को की काट छांट कर दें ताकि पोधों को अच्छी धुप मिले. मिलीबग की निगरानी व उपचार करें
पुष्प		गेंदे की तैयार पौध की रोपाई करें तथा ग्रीष्मऋतु के लिये नर्सरी तैयार करें। किसान भाईयों को सलाह है कि ग्रीष्मऋतु के लिये गेंदे की तैयार पौध की रोपाई करें। ग्रीष्मऋतु फूलों की नर्सरी लगाने का समय है। माइट्स से बचाब हेतु स्पेर्मेथ्रिन 0.05 % 15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें।
मधुमक्खीपालन	सक्रिय	मधु मक्खीयों के कमजोर गृहों को बनावटी खुराक 50 प्रतिशत चीनी व 50 प्रतिशत गुड का घोल बन कर दें. ततैईयों (bumblebee) रिंगड से बचाब करें और फ़ाउल ब्रूड रोग के प्रति सचेत रहे. मौनालय के आसपास घास व खरपतवार नियंत्रण रखें तापमान बढ़ रहा है पैकिंग निकाल दें समय समय पर अतिरिकत फ्रेम डाल दें ताकि मधु मखियों अपनी बढोतरी कर सकें
पालीहोउस खेती		Downy mildew, एफिड्स और स्पोडोप्टेरा के नियंत्रण के लिए अनुशंसित रसायनों का छिड़काव करें। पॉलीहाउस में पीले चिप चिपे जाल को रखें. पाली होउस में लगी सब्जिओं टमाटर शिमला मिर्च आदि में powdery mildew के आने की संभावना है उपचार हेतु hexaconazole 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड्काब करें . पॉलीहाउस में अनुकूलतम तापमान बनाए रखने के लिए उन्हें दिन के समय साइड वेंट खोलने की सलाह दी जाती है।
पशुपालन मवेशी भेड़बकरी	देखभाल	डीवार्मिंग व खुर्मुएँ वीमारी के लिए टीकाकरण करवाएं इस समय मैदानिं भोगों से पशुओं का पलायन होता है. पशुओं के जगह को सुखा

इत्यादी		रखें पशुओं को हरे चारे के भूसे के साथ 10:1 के अनुपात में खिलाएं जुओं चिचाडों से बचें हेतु butox२ मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से पशुशाला में छिडकें. दाना मिश्रण में उर्जा की मात्रा २-३ प्रतिसत बड़ा दें
मुर्गीपालन		मुर्गियों को बीमारियों से बचाने के लिए मुर्गीघरो में नमी मत होने दे मुर्गीघरो में डीप-लीटर को दुसरे-तीसरे दिन उलट दे, ताकि बीमारी न फैले। मुर्गियों को साफ पानी दें. मुर्गियों के अण्डों का उत्पादन बढ़ने हेतू रोशनी 14 से 16 घंटे का उचित प्रबन्ध् करें। रानीखेत वीमारी के लिए टिकाकर्ण करवा दें मुर्गियों को कैल्शियम के कंकड़ दे। ब्राईलर को लगातार फीड देते रहें ।पौल्ट्री आहार में २ प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा आहार में बड़ा दें। मुर्गियों को साफ पानी दें। मुर्गी घरों में हवा की आवाजाही सुनिश्चित करें। एहतियाती उपायों के लिए फार्मेलिन 40% @ 1 लीटर को 9 लीटर पानी में मिलाकर खेत के बाहर या आसपास छिड़काव करें
मछलीपालन	रखरखाव और पालन-पोषण	मछली पालने के लिए तालाबों में देसी खाद दालें और छोटी अम्गुलियेओं के पोषण की उचीत प्रबंध करें. पानी के साथ टैंक भरें और मछली छोटी अम्गुलियेओं प्रति 100 वर्ग मीटर के तालाब क्षेत्र में 150 फ़िंगरलिंग्स का संग्रहण करें . तीनो प्रकार की मछालियों का चयन करें। तालाब में पानी की सतह 6 फूट तक बनाए रखें खुराक 4 प्रतिशत शरीरी के हिसाब से ५-६ बार डालें मात्रा शारीर के भार के बरावर के हिसाब से बड़ा दें माइक्रोबियल संक्रमण को कम करने हेतु 15 दिनों के अंतराल पर नियमित नमक से स्नान करवाएं. ताज़े पिसे हुए उबले अंडे और बकरी का जिगर देने से मछली में बढावा होता है।

नोडल अधिकारी,ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
सस्य विज्ञान विभाग,
चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय
पालमपुर -176062
हिमाचल प्रदेश